सामर्थी बनाना
अधिवेशन 5

परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है भाग—1

परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है — भाग 1

इस अध्याय का उद्धेश्य हमारे लोगों को यह समझाना है कि, परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है।

हममें से बहुत से लोग कलीसियाओ में बड़े हुए हैं, और वे कलीसिया के बारे में काफी कुछ जानते हैं। इस अधिवेश्न मे हम पहले से परिकल्पित धारणाओ को एक किनारे कर देगें, और गहराई से यह देखेंगे कि बाइबल कलीसिया के बारे में क्या कहती है।

जब हम ये देखते हैं कि कलीसिया जब पैदा हुई तो परमेश्वर के दिल में क्या था, तो हम पाते हैं कि

- यह एक जीवन बदलने वाला काम होगा।
- यह हमारे उद्धेश्य और व्यवहार को बदल देगा।
- यह हमारे जीवन की प्राथमिकताओं को बदल देगा।

शब्द कलीसिया बाइबल में दो पहलूओं में प्रयोग किया गया है।

1. विश्वव्यापी कलीसिया वह है जिसमें परमेश्वर के सभी लोग, हरेक पीढ़ी के लोग, हरेक देश शामिल है। इसका निम्न शब्दों मे विवरण दिया गया है

   - **इफिसीयों 3:10** — ''उसका (परमेश्वर) पूरा परिवार''

   - **इब्रानियों 12:23** — ''पहलौठे जिनके नाम स्वर्ग में लिखें हैं''

2. कलीसिया शब्द का दूसरा प्रयोग स्थानीय कलीसिया के रूप में किया गया है — विश्वासी विभिन्न स्थानों, शहर और घरों में एकत्र होते थे। यह बात निम्न पदों में मिलती है

   - **प्रेरित 14:23** — ''जब एक कलीसिया में उन्होनें प्राचीनों की नियूक्ति की''

   - **1 कुरिन्थियों 4:17** — ''जैसा मैं हर कलीसिया में हर जगह प्रचार करता हूं''

   - **कुलुसियों 4:15** — ''निम्फास और जो कलीसिया उसके घर में है उसे नमस्कार करो''

परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है – भाग 1

जब आप खोज लें कि कलीसिया वास्तव में क्या है तो यह – आपकी प्रेरणा, व्यवहार और जीवन की प्राथमिकता को बदल देगा।

बाइबल कलीसिया के विषय दो पहलूओं में बोलती है। हमें इन शब्दों के अन्तर को जानना होगा कि, वे कैसे प्रयोग किए गए है।

1. विश्वव्यापी कलीसिया

इफिसीयों 3:10 – *''उसका (परमेश्वर) पूरा परिवार''*

इब्रानियों 12:23 – *''पहलौठे जिनके नाम स्वर्ग में लिखें हैं''*

2. स्थानीय कलीसिया

प्रेरित 14:23 – *''जब एक कलीसिया में उन्होनें प्राचीनों की नियुक्ति की''*

1 कुरिन्थियों 4:17 – *''जैसा मैं, हर कलीसिया में हर जगह प्रचार करता हूं''*

कुलुसियों 4:15 – ''निम्फास और जो कलीसिया उसके घर में है उसे नमस्कार करो''

दूसरी तरफ **साम्प्रदायिक** कलीसिया
बाइबल से असंबंधित

विभिन्न शहरों में बहुत सी मण्डलीयां थी, परन्तु वे सभी अपने आप को यीशु की कलीसिया की तरह देखती थी और उनमें कोई भिन्नता नहीं थी।

किसी दिन परमेश्वर यीशु की प्रार्थना का उत्तर देने वाला है, और आत्मा की एकता बनाने जो सभी विश्वासीयों को वर्तमान अलगाव की दीवार से उपर उठाएगा जिस से हम एक हो जाएं।

''मैं उनके लिए प्रार्थना करता हूं जिन्हें तूने मुझे दिया है। पवित्र पिता... अपने उस नाम से... कि वे हमारी नाई एक हों जैसा हम हैं! कि वे सब एक हों जैसा तू हे पिता मुझ में हैं और मैं तुझ में हूं, वेसे ही वे भी हममें हों, इसलिए कि जगत प्रतीती करें कि तू ही मुझे भेजा है''– यहून्ना 17:9, 11 और 21

पांच कुंजी शब्द – क्रियात्मक तस्वीरें जो ये दिखाते हैं कि परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है

दूसरी तरफ आज शब्द ''कलीसिया'' का प्रयोग तीसरा और बाइबल से असंबंधित शब्द के रूप में भी किया जाता है जिसे हम **साम्प्रदायिक** कलीसिया शब्द के रूप में जानते हैं।

- सन्त पौलुस ने कभी भी एक बेपटिस्ट चर्च, एक लूथरन चर्च, एक केथोलिक चर्च, एक प्रेसबीटेरियन चर्च, एक मेथोडिस्ट चर्च, को शहर की विभिन्न सड़को पर होने का सपना नहीं देखा था।

- इफिसुस में बहुत सी विश्वासी मण्डलीयां थी, जो विभिन्न या बड़े मकानों में इक्ट्ठे होते थे, परन्तु वे सभी के सब मसीह की कलीसिया थे।

- कलीसियाओं में बाइबल से असहमत ये असंबंधित विकास आपसी प्रतिर्स्पधा और झगड़े का एक कारण है।

- फिर भी यहां पर एक वर्तमान में बने रहने वाला विधान है। साम्प्रदायिक कलीसियांए पीढ़ीयों से बनी हुई हैं। हम बस यूहीं कलीसिया के सदीयों के इतिहास को उठाकर फेंक नहीं सकते।

- व्यक्तिगत रूप से हम विरासत के कारण और कुछ संबंधों के कारण बेपटिस्ट हैं, पर पहले और सबसे पहले हम विश्वासी हैं।

- जब अमेरिका में हमारी कलीसिया में पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्में का चलन आरम्भ हुआ, तो वहां पर हमारी बेपटिस्ट चर्च के कुछ सदस्यों को यह पसन्द नही आया। इसलिए कलीसिया कई हिस्सों में बंट गई। एक डिकन ने समझने की कोशिश की; हमने बाइबल खोली और उसे दिखा दिया कि यह क्या कहती है। उस दिन उसने अपने सिर को हिलाया और कहा, ''मुझे इसकी परवाह नहीं कि यह बाइबल मे है या नही, पर यह बेपटिस्ट नही है!''

परमेश्वर का उद्धेश्य अपने आपको हमारे हृदयों में भर देने से है। भवनों के नाम, हमारे रीति रिवाज और यहां तक कि विभिन्न विश्वास, अलगाव की इस बात को अपने आधीन नही करेगें। हम सबको एक देह में एकत्र होना है, यीशु ने यहून्ना 17:9; 11—13 में प्रार्थना की और किसी दिन परमेश्वर यीशु की **यहून्ना 17:11** की प्रार्थना का उत्तर देने जा रहा है।

पवित्रआत्मा की इच्छा यह है कि हम अलग कर देने वाली दीवारों से उपर उठें, और इस बात पर ध्यान दें, कि हम एक बड़े परिवार का हिस्सा हैं, जिसमें विश्वासी सभी साम्प्रदायों की कलीसियाओं से आए हैं।

कलीसिया एक इकाई है न कि एक संस्था। यह एक देह है एक जीवित देह, न कि ढ़ांचा या संगठन जब हम यह बोलते हैं कि यीशु एक कलीसिया को बना रहा है तो हम यह बात नही कर रहे कि यीशु कलीसिया के एक बड़े संगठन को बना रहा है। हम विश्वव्यापी अगुवों के एक तन्त्र की आधीनता मे नही होगें। शैतान इसकी स्थापना करेगा जैसा कि वह एक धर्म द्रोही कलीसिया को विकसित कर रहा है। वह हमें सताएगी जो मसीह की जीवित देह हैं।

जो सच्चाई से मसीह की आराधना करते हैं और जिनमें पवित्रआत्मा वास करता है, वे परमेश्वर के रास्ते पर हैं। वे इसका अनुभव करेंगे कि वे आपस मे भाई बहन हैं; कि वे इस समाज में एक कलीसिया के हिस्से है। तब हम साम्प्रदायिक नाम की छाप के बारे में चिन्तित नहीं होगें

परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है — भाग 1

जब आप खोज लें कि कलीसिया वास्तव में क्या है तो यह — आपकी प्रेरणा, व्यवहार और जीवन की प्राथमिकता को बदल देगा।

बाइबल कलीसिया के विषय दो पहलूओं में बोलती है। हमें इन शब्दों के अन्तर को जानना होगा कि, वे कैसे प्रयोग किए गए है।

1. विश्वव्यापी कलीसिया

इफिसीयों 3:10 — *''उसका (परमेश्वर) पूरा परिवार''*

इब्रानियों 12:23 — *''पहलौठे जिनके नाम स्वर्ग में लिखें हैं''*

2. स्थानीय कलीसिया

प्रेरित 14:23 — *''जब एक कलीसिया में उन्होनें प्राचीनों की नियुक्ति की''*

1 कुरिन्थियों 4:17 — *''जैसा मैं, हर कलीसिया में हर जगह प्रचार करता हूं'''*

कुलुसियों 4:15 — ''निम्फास और जो कलीसिया उसके घर में है उसे नमस्कार करो''

दूसरी तरफ **साम्प्रदायिक** कलीसिया
बाइबल से असंबंधित

विभिन्न शहरों में बहुत सी मण्डलीयां थी, परन्तु वे सभी अपने आप को यीशु की कलीसिया की तरह देखती थी और उनमें कोई भिन्नता नहीं थी।

किसी दिन परमेश्वर यीशु की प्रार्थना का उत्तर देने वाला है, और आत्मा की एकता बनाने जो सभी विश्वासीयों को वर्तमान अलगाव की दीवार से उपर उठाएगा जिस से हम एक हो जाएं।

''मैं उनके लिए प्रार्थना करता हूं जिन्हें तूने मुझे दिया है। पवित्र पिता... अपने उस नाम से... कि वे हमारी नाई एक हों जैसा हम हैं! कि वे सब एक हों जैसा तू हे पिता मुझ में हैं और मैं तुझ में हूं, वेसे ही वे भी हममें हों, इसलिए कि जगत प्रतीती करें कि तू ही मुझे भेजा है''— यहून्ना 17:9, 11 और 21

पांच कुंजी शब्द — कियात्मक तस्वीरें जो ये दिखाते हैं कि परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है

बाइबल में पांच (5) ''शब्द – क्रियात्मक तस्वीरें'' मिलती है जिसके द्वारा हम ये व्याख्या करेगे कि परमेश्वर कलीसिया को वास्तव में कैसे देखता है।

- परमेश्वर के विशेष लोग
- परमेश्वर के रहने का स्थान
- परमेश्वर का परिवार
- मसीह की देह
- मसीह की दुल्हन

परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है – भाग 1

जब आप खोज लें कि कलीसिया वास्तव में क्या है तो यह – आपकी प्रेरणा, व्यवहार और जीवन की प्राथमिकता को बदल देगा।

बाइबल कलीसिया के विषय दो पहलूओं में बोलती है। हमें इन शब्दों के अन्तर को जानना होगा कि, वे कैसे प्रयोग किए गए है।

1. विश्वव्यापी कलीसिया

इफिसीयों 3:10 ..... – *''उसका (परमेश्वर) पूरा परिवार''*

इब्रानियों 12:23 ..... – *''पहलौठे जिनके नाम स्वर्ग में लिखें हैं''*

2. स्थानीय कलीसिया

प्रेरित 14:23 ..... – *''जब एक कलीसिया में उन्होनें प्राचीनों की नियुक्ति की''*

1 कुरिन्थियों 4:17 ..... – *''जैसा मैं, हर कलीसिया में हर जगह प्रचार करता हूं'''*

कुलुसियों 4:15 ..... – ''निम्फास और जो कलीसिया उसके घर में है उसे नमस्कार करो''

दूसरी तरफ **साम्प्रदायिक** ..... कलीसिया
बाइबल से असंबंधित

विभिन्न शहरों में बहुत सी मण्डलीयां थी, परन्तु वे सभी अपने आप को यीशु की कलीसिया की तरह देखती थी और उनमें कोई भिन्नता नहीं थी।

किसी दिन परमेश्वर यीशु की प्रार्थना का उत्तर देने वाला है, और आत्मा की एकता बनाने जो सभी विश्वासीयों को वर्तमान अलगाव की दीवार से उपर उठाएगा जिस से हम एक हो जाएं।

''मैं उनके लिए प्रार्थना करता हूं जिन्हें तूने मुझे दिया है। पवित्र पिता... अपने उस नाम से... कि वे हमारी नाईं एक हों जैसा हम हैं! कि वे सब एक हों जैसा तू हे पिता मुझ में हैं और मैं तुझ में हूं, वेसे ही वे भी हममें हों, इसलिए कि जगत प्रतीती करें कि तू ही मुझे भेजा है''– यहून्ना 17:9, 11 और 21

पांच कुंजी शब्द – कियात्मक तस्वीरें जो ये दिखाते हैं कि परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है

कलीसिया <u>परमेश्वर के विशेष लोगों</u> से बनाई गई है।

- पहली और सबसे पहली बात, कलीसिया (चर्च) आधारभूत रूप से भवन नहीं है, न ही आरधना का एक रास्ता, न ही एक साम्प्रदाय या एक संगठनात्मक ढ़ांचा जिससे हम संबंधित हो – <u>परन्तु कलीसिया लोग हैं</u>।

- इन सब बातों की अपनी जगह है, परन्तु ये परिपक्वता पा रहे, बढ़ रहे, और उन्नति कर रहे परमेश्वर के लोगों से महत्वपूर्ण नहीं है। लोगों की जरूरतें पहले स्थान पर आनी चाहिएं।

- परमेश्वर के विशेष लोगों के दो महत्वपूर्ण गुण है।

पहला, वे एक **<u>चुने</u>** हुए लोग हैं 1पतरस 2:9—10, ''पहले वे उसके लोग नही थे परन्तु अब हैं''।

- कलीसिया के लिए यूनानी शब्द **<u>एक्लीसिया</u>** – बुलाऐ हुए लोग – बाकि की मानव जाति में से परमेश्वर के लिए बुलाऐ गए लोग (प्रशिक्षण पुस्तिका में दिये गए पर्चे को उन्हें पढ़ने के लिए कहें)।

- यीशु ने कहा कि हरेक परमेश्वर की सन्तान नही है! (यहून्ना 8:44)

- केवल वही लोग उसकी सन्तान हैं, जिन्होंने उसके पुत्र यीशु मसीह को मान लिया है, और उसके अनुयायी बन गए हैं – जो उसको प्रेम करते, आज्ञा मानते और आदर करते है; ये उसकी आत्मिक सन्तान है। बाकी के नहीं।

- परमेश्वर ने अब्राहम को चुना, जिसने पुराने नियम में परमेश्वर की बुलाहट का प्रत्युतर दिया, इसी तरह से परमेश्वर ने उन लोगों को चुना है, जिन्होंने यीशु को प्रत्युतर दिया, और जैसा कि वे आज उसके विशेष लोग हैं।

- यह बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए, कि परमेश्वर ने हमें इसलिए नहीं चुना क्योंकि हम दूसरों से अधिक उत्तम है। हम परमेश्वर की **<u>विशेष पसन्द</u>** नहीं हैं, पर इसकी बजाए हमें परमेश्वर के **<u>प्रतिनिधि</u>** होने के लिए चुना गया है। हम ऐसे लोग हैं, जो संसार को यह दिखाऐगें कि परमेश्वर के विशेंष लोग होना क्या होता है।

- इसलिए परमेश्वर के विशेष लोग बनने में इसमें **<u>दोहरा</u>** चुनना शामिल है। यह काफी नहीं है कि परमेश्वर ने हमें चुना है पर हमें भी उसे अपने परमेश्वर के रूप में चुनना है, हम केवल तभी उसके विशेष लोग बनते हैं, जब हमने भी अपना चुनाव कर लिया हो।

- यदि आप एक ऐसा कदम उठाएं जो आपको ये करने मे निर्देश दे, ''हां प्रभु मैं आपका विशेष व्यक्ति हूंगा, बाकी सबसे भिन्न'', तब आप कलीसिया होने की योग्यता रखते हैं, अन्यथा आप अपने पुरे जीवन एक कलीसिया में हिस्सा लेते रहेंगे, परन्तु तौभी असल कलीसिया से संबंधित न होंगे।

परमेश्वर के विशेष लोग

कलीसिया ''लोग'' है
- — भवन नहीं
- — उपासना पद्धति नहीं
- — ढ़ांचा नहीं
- — रीति रिवाज नहीं

...परन्तु लोग

— एक .....**चुने**..... लोग

''पर तुम एक चुना हुआ वंश... निज प्रजा हो इसलिए कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करो, तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे पर अब परमेश्वर की प्रजा हो, तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई''— 1 पतरस 2:9—10

''कलीसिया = ''.....**''एक्लीसिया''**..... — ''बुलाए हुए लोग''

''यदि तुम संसार के होते तो संसार अपनों से प्रीति रखता मैंने तुम्हें चुन लिया है इसलिए संसार तुमसे बैर रखता है'' यहून्ना 15:19

कलीसिया कुछ लोगों का एक समुह है जिन्होंने अपना जीवन परमेश्वर की बुलाहट के आधीन कर दिया है। उदाहरण : अब्राहम

परमेश्वर की.....**विशेष पसन्द**..... नहीं

इसकी बजाए परमेश्वर के.....**प्रतिनिधि**..... हैं

तो इसलिए यह.....**दोहरा**.....चुनना है।

एक .....**अलग किए हुए**..... लोग — 2कुरिन्थियों 6:14—17

पद 14 दो निश्चित समूह

अविश्वासीयों के साथ असमान जूए में न जुतों, धर्मी का अधर्मी के साथ क्या सम्बन्ध? ज्योति का अन्धकार से क्या लेना देना?

चुने हुए लोग होने के साथ–साथ हम देखते हैं कि, कलीसिया एक **<u>अलग किए हुए</u>** लोग भी हैं।

- जब एक बार हम परमेश्वर के लिए अपनी पसन्द का प्रत्युतर दे देते हैं तब कुछ गम्भीर बातें हमारे साथ होने लगती हैं, पौलुस कुरिन्थियों (2कूरिन्थि. 6:14–17) के विश्वासीयों को ये कहता है कि, हम परमेवर के लिए अलग किए गए है। पौलुस दो तरह के समूहों के लोगों की तुलना करता है।

    - परमेश्वर के लोग और पाप के लोग
    - विश्वासी और अविश्वासी
    - ज्याति और अन्धकार
    - धार्मिकता और अधार्मिकता

- यदि हम परमेश्वर के लोग, ज्योति के लोग और धार्मिकता के लोग हैं, तब हमें इस संदर्भ में दिए गए निर्देशों को जो समूह के दूसरे सदस्यों से संबंधित है, गम्भीरता से लेना चाहिए।

परमेश्वर के विशेष लोग

कलीसिया ''लोग'' है
- – भवन नहीं
- – उपासना पद्धति नहीं
- – ढ़ांचा नहीं
- – रीति रिवाज नहीं

...परन्तु लोग

– एक .....**चुने**..... लोग

''पर तुम एक चुना हुआ वंश... निज प्रजा हो इसलिए कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करो, तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे पर अब परमेश्वर की प्रजा हो, तुम पर दया नहीं हुई थी पर अब तुम पर दया हुई''– 1 पतरस 2:9–10

''कलीसिया = ''.....**''एक्लीसिया''**..... – ''बुलाए हुए लोग''

''यदि तुम संसार के होते तो संसार अपनों से प्रीति रखता मैंने तुम्हें चुन लिया है इसलिए संसार तुमसे बैर रखता है'' यहून्ना 15:19

कलीसिया कुछ लोगों का एक समुह है जिन्होंने अपना जीवन परमेश्वर की बुलाहट के आधीन कर दिया है। उदाहरण : अब्राहम

परमेश्वर की.....**विशेष पसन्द**..... नहीं

इसकी बजाए परमेश्वर के.....**प्रतिनिधि**..... हैं

तो इसलिए यह.....**दोहरा**.....चुनना है।

एक .....**अलग किए हुए**..... लोग – 2कुरिन्थियों 6:14–17
पद 14 दो निश्चित समूह

अविश्वासीयों के साथ असमान जूए में न जुतों, धर्मी का अधर्मी के साथ क्या सम्बन्ध? ज्योति का अन्धकार से क्या लेना देना?

- पद 15 हमं यह निर्देश देता हैं कि, ''अन्य लोगों के साथ असमान जुए में न जुतो'' भारत की कलीसिया हमारी अमेरिका की कलीसिया से इस मामले में अच्छी हो सकती है। यह नियम निम्नलिखित बातों पर लागू होता ह।

    - विवाह... अविश्वासीयों से विवाह नही करना चाहिए।

    - दूसरी तरह की साझेदारी.... व्यवसाय और अन्य कारोबार। हमारा लक्ष्य शायद अलग–2 हैं। बहुत बार एक विश्वासी एक सा महसुस करता है कि, परमेश्वर उससे कुछ करवाना चाहता जो अविश्वासी को मूर्खता की बात जान पड़ती है।

    - और गहरे मित्र... हमें संसार के लोगों से बिल्कुल ही अलग नहीं हो जाना चाहिए। बाज़ार में, पड़ोस में लोग काम कर रहे हैं जिनके साथ हमें आम, मित्रता पूर्ण प्रेम भरे तरीके से सम्बंध रखना है। परन्तु जो लोग हमारे बहुत नज़दीकी, जिनके साथ हम अपना अधिक समय बिताते हैं, जिन्होंने हमारे जीवन पर बहुत बड़ा प्राभाव डाला है, उन्हें परमेश्वर के लोग ही होना चाहिए, ताकि हम उनके साथ आपसी प्रेम और मसीह की सेंवकाई में इक्ट्ठें होकर बढ़ते जांए।

- जब पौलुस ने तीमुथीयस को 2 तीमुथीयस 2:22 मे लिखा कि वो, ''जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम लेते हैं, उनक साथ धर्म, और विश्वास, और प्रेम, और मेल मिलाप का पीछा कर।''

- पद16 — कितना बड़ा सुअवसर! ''क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मदिर हैं, ''जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उनमें बसुंगा और उन मे चला फिरा करूंगा; और मैं उनका परमेश्वर हूंगा और वे मेरे लोग होंगे''। कैसे हम परमेश्वर के साथ इस तरह के सम्बन्ध को बना सकते हैं, और कैसे हम उसे जिसके पास इस तरह का संबंध नहीं है, को इस तरह के संबंध में ला सकते हैं।

- पद 17 — इसलिए परमेश्वर का आदेश स्पष्ट है, ''उनके बीच में से निकलो और अलग रहो, और अशुद्ध वस्तु को मत छुओ तो मैं तुम्हे ग्रहण करूंगा''।

- अब यहां पर दो ऐसे विषय हैं, जिनके बारें में हमें जानकारी लेने की जस्रत है :

    - परमेश्वर के लोगों का ''आत्मिक व्यभिचार''। परमेश्वर इस बात से घृणा करता है, जब लोग यह दावा करते हैं कि वह ससार के लोगों से भिन्न नहीं हो सकते या नहीं होगा। परमेश्वर इस व्यवहार को अविश्वास योग्यता के रूप में देखता है।

    - सदीयों से विश्वासीयों ने बाइबल के इस पद का गलत उपयोग दूसरे विश्वासीयों के विरोद्ध में किया और अपने आपको बांट लिया, मूर्तिपूजकों और

पद15 सांझेदारी

और बलियाल का मसीह से क्या सम्बन्ध? या एक विश्वासी का अविश्वासी से साथ क्या हिस्सा ?

पद 16 हमारा विशेष पृथकता

और मूरतों के साथ परमेश्वर के मंदिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मदिर हैं, ''जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उनमें बसुंगा और उन मे चला फिरा करूंगा; और मैं उनका परमेश्वर हूंगा और वे मेरे लोग होंगे''।

पद 17 परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञा

' *'इसलिए प्रभु कहता है कि उनके बीच में से निकलो और अलग रहो, और अशुद्ध वस्तु को मत छुओ तो मैं तुम्हे ग्रहण करूंगा''*

परमेश्वर के रहने का स्थान — आत्मिक भवन

कलीसिया इस पृथ्वी पर परमेश्वर के रहने का स्थान बन जाती है।

1 कुरिंथियों 3:9 — हम परमेश्वर के.....**भवन**.....हैं

1 पतरस 2:4—5 — परमेश्वर के भवन के.....**जीवित पत्थर**.....हैं

''जिसमें सारी रचना मिलकर प्रभु में एक पवित्र मंदिर बनती जाती है''

— इफिसीयों 2:21

एक आत्मिक भवन जिसमें परमेश्वर आज इस पृथ्वी पर रहता है, जहां उसकी महिमा प्रगट होती, जहां उसकी स्तुति होती और प्रशंसा होती है।

''तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाई आत्मिक घर बनते जाते हो''

— 1 पतरस 2:5

परमेश्वर का परिवार

कलीसिया परमेश्वर का घराना है — एक परिवार

1 तीमुथी 3:15 *''...परमेश्वर का घर, जो कलीसिया है...''*

गलातियों 6:10 *''...विश्वासी भाईयो के साथ...''*

इफिसीयों 2:19 *''...पवित्र लोगो के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के लोग है.''*

एक सनसनीखेज कथन : बहुत से रविवारिय आरधना में भाग लेने वालों ने कलीसिया को कभी नहीं पाया है

कलीसिया के लिए दूसरा ''शब्द — क्रियात्मक तस्वीर'', की व्याख्या परमेश्वर के रहने के स्थान, अर्थात एक आत्मिक भवन के रूप में करता है।

- बाइबल कहती है कि अब पृथ्वी पर कलीसिया परमेश्वर के रहने का स्थान बन गया है।

हम परमेश्वर के **भवन** हैं (1कुरिरिन्थियों 3:9)

- यहून्ना 4:14 में यीशु ने कुए पर उस स्त्री से कहा कि एक दिन आ रहा है, जब यह कोई अर्थ नहीं रखेगा, कि हम कहां परमेश्वर की आराधना करतें हैं परन्तु हम उसकी आरधना आत्मा और सच्चाई में'' करते है।

- निसंदेह हमारे पास अपनी कलीसियाओं के लिए भवन हैं। परन्तु सच्चा स्थान वह हैं, जहां परमेश्वर उसके लोगों के दिलों में आज पृथ्वी पर वास करता है।

हम उसके भवन के **जीवित पत्थर** हैं (1 पतरस 2:4—5)। वह हमें आत्मिक भवन में निर्मित कर रहा है।

- पवित्रआत्मा सावधानी से हमें परमेश्वर के वास करने के स्थान में जोड़ रहा है।

- एक सच्ची कलीसिया और एक मण्डली में भिन्नता होती है, जैसे ईटों के एक ढेर और एक भवन में। यह तब तक एक भवन नहीं बन जाता जब तक ईंट पर ईंट, नक्शे या दिए गए नमूने के अनुसार नहीं बनते चले जाते। यह तब तक एक सच्ची कलीसिया नही बन जाती जब तक पवित्रआत्मा ईंट पर ईंट अर्थात विश्वासी पर विश्वासी, परमेश्वर की योंजना या नक्शे के अनुसार नही जोड़ता चला जाता।

- इफिसीयों 2:21 कहता है कि, ''सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मदिर बनती जाती है।

- हम परमेश्वर के मंदिर हैं (1 कुरिन्थियों 6:19) जब हम एक मंदिर के रूप में इक्ट्ठे होते हैं तब हम पृथ्वी पर परमेश्वर की उपस्थिति के प्रभावशली भाव बन जाते है।

3. तीसरा शब्द — क्रियात्मक तस्वीर : कलीसिया परमेश्वर के परिवार से है

- कलीसिया 1 तीमुथीयुस, गलीतिया 6, और इफिसीयों 2 के संदर्भों में, '' परमेश्वर के घराने'' के नाम से संबोधित की गई है।

एक सनसनीखेज कथन : बहुत से रविवारिय आरधना में भाग लेने वालों ने वास्तव में कलीसिया को कभी नहीं पाया है

पद15 सांझेदारी

और बलियाल का मसीह से क्या सम्बन्ध? या एक विश्वासी का अविश्वासी से साथ क्या हिस्सा ?

पद 16 हमारा विशेष पृथकता

और मूरतों के साथ परमेश्वर के मंदिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मदिर हैं, ''जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उनमें बसुंगा और उन मे चला फिरा करूंगा; और मैं उनका परमेश्वर हूंगा और वे मेरे लोग होंगे''।

पद 17 परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञा

'इसलिए प्रभु कहता है कि उनके बीच में से निकलो और अलग रहो, और अशुद्ध वस्तु को मत छुओ तो मैं तुम्हे ग्रहण करूंगा''

परमेश्वर के रहने का स्थान — आत्मिक भवन

कलीसिया इस पृथ्वी पर परमेश्वर के रहने का स्थान बन जाती है।

1 कुरिंथियों 3:9 — हम परमेश्वर के.....**भवन**.....हैं

1 पतरस 2:4—5 — परमेश्वर के भवन के.....**जीवित पत्थर**.....हैं

''जिसमें सारी रचना मिलकर प्रभु में एक पवित्र मंदिर बनती जाती है''
— इफिसीयों 2:21

एक आत्मिक भवन जिसमें परमेश्वर आज इस पृथ्वी पर रहता है, जहां उसकी महिमा प्रगट होती, जहां उसकी स्तुति होती और प्रशंसा होती है।

''तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाई आत्मिक घर बनते जाते हो''
— 1 पतरस 2:5

परमेश्वर का परिवार

कलीसिया परमेश्वर का घराना है — एक परिवार

1 तीमुथी 3:15 *''...परमेश्वर का घर, जो कलीसिया है...''*

गलातियों 6:10 *''...विश्वासी भाईयो के साथ...''*

इफिसीयों 2:19 *''...पवित्र लोगो के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के लोग है.''*

एक सनसनीखेज कथन : बहुत से रविवारिय आरधना में भाग लेने वालों ने कलीसिया को कभी नहीं पाया है

- यदि हम अपने आपको दुसरे विश्वासीयों से अलग करें तो, हमारी मसीहत की गवाही की आग इतनी तेजी से नहीं जलेगी और हमारे जीवन के हरेक अंगारे बुझ सकते हैं।

— उदाहरण : अंगारे को आग से बाहर निकलना

- यह पूरा का पूरा विचार यूनानी शब्द **''कोईनोनिया''** में प्रगट किया गया है, जो कि पवित्र.शास्त्र में बहुधा ''संगति'' शब्द में अनुवाद किया गया है। कोईनोनिया की सही परिभाषा ये है कि **''एक ही जहाज में साथी''**।

- 1 यहून्ना 1:3 — परमेश्वर ने हमें अपने पुत्र की संगति में निमत्रित किया है।

- 1 यहून्ना 1:7 ''पर यदि जैसा वह ज्योति में है, हम भी ज्योति में चलें तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है''

- इसलिए ''कोईनोनिया'' शब्द की एक और समझ है, परमेश्वर कैसे अपनी कलीसिया को देखता है। उसके भवन या ''उसके लिए बुलाए हुए'' होना ही काफी नहीं है। परमेश्वर चाहता हैं कि हम इस पृथ्वी पर उसके परिवार हों, जिसमें लोग एक दूसरे को प्रेम करें, और एक दुसरे की जरूरतें पुरी करें जैसा कि संसार में कोई नहीं करता।

- कलीसिया बहन और भाईयों का एक समुह हैं। यदि आप अपने आत्मिक परिवार की चिन्ता नहीं करेंगें तो कही पर कुछ गड़बड़ है। पवित्रआत्मा हमारे बीच में एक साथ रहने की इच्छा को पैदा करेगा।

- असल में पवित्रआत्मा हमारे द्वारा काम कर रहा है ताकि एक नया **समाज** स्थापित हो।

उदाहरण : अंगारा और आग

यह पूरे विचार यूनानी शब्द .....**''कोईनोनिया''**..... में वर्णन किए गए हैं

जिसका बहुधा अनुवाद ''संगति'' हुआ है। 1 यहून्ना 1:3 और 7
1कुरिंथियों 1:19

संगति की परिभाषा :.....**''एक ही जहाज में साथी''**.....

''इसलिए कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो और हमारी ये सहभागिता पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है'' – 1 यहून्ना 1:3

''पर यदि जैसा वह ज्योति में है, हम भी ज्योति में चलें तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है'' – 1यहून्ना 1:7

जब तक कि कलीसिया ''भाईयों का समूह'' ना हो, तब तक यह सच्ची कलीसिया नहीं है। यीशु ने कहा कि जीवन देने वाला प्रेम ही वास्तव में उसकी कलीसिया का चिन्ह होगा – लोग एक दूसरे की चिन्ता करते हैं, एक दूसरे पर निगाह रखते, एक दूसरे में अधिक आनन्द और सहारा पाते हैं।

''...यदि एक दूसरे से प्रेम रखते हो सब जानेगे कि तुम मेरे चेले हो''
– यहून्ना 13:35

पवित्रआत्मा ऐसे सम्बन्धात्मक संगति को पैदा करना चाहता है कि इस आत्मिक परिवार के सदस्य अलग–2 खड़े हो नहीं सकते!

दरअसल एक.....**समाज**..... बनाया गया था।

रेल्फ मार्टिन हमारे लिए एक समाज का अनुवाद करता है :

''विश्वासीयों के लिए, समाज एक पारिवारीक सम्बन्ध के रूप में वर्णन किया जा सकता है; समाज में आने का अर्थ है, एक ऐसे सम्बन्धों से आगे बढ़ना है जो, मेरी सुविधा पर या मेरी आवश्यकताओं के आधार पर नही, पर ऐसे सम्बन्ध हैं, जो समर्पण पर आधारित हैं : भले ही ये सुविधाजनक हैं या नहीं, भले ही आपको इनकी आवश्यकता हो या ना हो, मैं आपके लिए एक भाई और बहन बनने के लिए समर्पित हूं। एक साथ एक छत के नीचे रहना या अपना वेतन और भौतिक वस्तुएं सांझी करना, सामाजिक जीवन का आवश्यक पहलू नहीं हैं। पर ये भाई और बहन के आपसी सम्बन्धों की डोर है''।

- हमारे चारों ओर का संसार एक दुसरे की बजाए आत्म–निर्भर होने पर जोर देता है।

- मसीह का राज्य, ''एक दूसरे के लिए अपनापन'' पर जोर देता है आपकी पुस्तक में 30 ''एक दूसरे के लिए'' की सूची दी गई है। जो पवित्रशास्त्र में पाए जाते हैं – प्रेम और एक दूसरे की सेंवा करने के तरीके।

- ''एक दुसरे के लिए'' की सूची में से **कुछ को पढ़ें**।

- नोट कीजिए कि इन में से कुछ ही कार्य रविवार सुबह अभ्यास में लाए जा सकते है। जबकि इनमें से बहुत से हमारे प्रतिदिन के जीवन में कलीसिया के ''भवन'' या आरधना के बाहर ही अभ्यास में लाए जा सकते हैं।

- प्रशिक्षण पुस्तिका में, ''परमेश्वर का उद्धेश्य कलीसिया के लिए...'' से आरम्भ होने वाले अन्तिम पैरे को पढ़ें।

हमारा समाज जोर देता है – आत्म–निर्भरता पर

मसीह का राज्य बयान करता – एक दूसरे का अपनापन

देखिए : ''30 एक दूसरे को'' नये नियम में

परमेश्वर का उद्धेश्य कलीसिया के लिए यह है कि उसके लोगों को आत्म–निर्भरता से, स्वयं केन्द्रित जीवन शैली से, बाहर निकाल कर एक ऐसे स्थान में खड़ा करें जहां वो असल मे एक परिवार हों, एक ऐसे स्थान पर जहां पवित्रआत्मा की संगति में वो अपने आप के लिए ना जीकर एक दूसरे के लिए जीना आरम्भ करते हैं।

30 ''एक दूसरे'' – एक दुसरे की सेवा करने के तरीके

''एक दुसरे के साथ संगति''	1 यहून्ना 1:7
''एक दुसरे से प्रेम करना''	यहून्ना 13:34–35
''एक दुसरे के सदस्य'' (निर्भर रहना)	रोमियों 12:5
''एक दुसरे पर प्रेम करना/कृपा दिखाना''	रोमियों 12:10
''एक दुसरे का आदर करो''	रोमियों 12:10
''एक दुसरे के साथ आनन्द करो''	रोमियों 12:15
''एक दुसरे के साथ रोओ''	रोमियों 12:15
''एक दुसरे के प्रति एक विचार रखो''	रोमियों 12:16
''एक दुसरे का न्याय न करो''	रोमियों 14:13
''एक दुसरे को ग्रहण करो''	रोमियों 15:7
''एक दुसरे को चिताओ''	रोमियों 15:14
''एक दुसरे को नमस्कार करो''	रोमियेां 16:16
''एक दुसरे के लिए ठहरो''	1 कुरिंथियों 11:33
''एक दुसरे की देखभाल करो''	1 कुरिंथियों 12:25
''एक दुसरे की सेवा करो''	गलातियों 5:13
''एक दुसरे का भार उठाओ''	गलातियों 6:2
''एक दुसरे पर दया रखो''	इफिसीयों 4:32
''एक दुसरे को क्षमा करो''	इफिसीयों 4:32
''एक दुसरे को समर्पित हो''	इफिसीयों 5:21
''एक दुसरे को सह लो''	कुलुसियों 3:13
''एक दुसरे को उत्साहित करो''	1 थिस्सलुनिकियों 5:11
''एक दुसरे को बनाओ''	1 थिस्सलुनिकियों 5:11
''एक दुसरे की चिन्ता किया करो''	इब्रानियों 10:24
''एक दुसरे की पहुनाई करो''	1 पतरस 4:9
'एक दुसरे को दान दिया करो''	1 पतरस 4:10
''एक दुसरे को मानवता से ढांपो''	1 पतरस 5:5
''एक दुसरे की बुराई न करो''	याकूब 4:11
''एक दुसरे के प्रति ना कुड़कुड़ाओ''	याकुब 5:9
''एक दुसरे के सामने पाप मान लो''	याकुब 5:16
''एक दुसरे के लिए प्रार्थना करो''	याकुब 5:16

1. हम परमेश्वर के विशेष लोग कैसे बन सकते हैं? (देखिए 1 पतरस 1:3,18—19,23)

2. यूनानी शब्द ''एक्लीसिया'' का क्या अर्थ है? और किन तीन श्रेणीयों में इसे नए नियम में प्रयोग गया है?

3. 2 कुरिंथियों 6:14—18 को सावधानी से देखे।

   – कौन से दो प्रकार के समूह के लोग इस हिस्से में बताए गऐ हैं?

   – परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञा अपने लोगों के लिए क्या है?

   – आपने अपने जीवन और सम्बन्धों में कैसे प्रत्युत्तर दिया, कि यह हिस्सा परमेश्वर के विशेष लोगों से क्या चाहता है?

4. वर्णन करें कैसे स्थानीय कलीसिया जिससे आप परीचित हैं, सच्चाई मे ''भाईयों और बहनों के समूह'' होने के लिए संघर्ष कर रही है?

5. 1 कुरिंथियों 12 सावधानी से पढ़िए, इस अध्याय से मसीह की देह के लिए क्या सीखा जा सकता है? सूची बनांए।

कलीसिया एक्लीसिया

यूनानी भाषा के नए नियम में केवल एक ही शब्द कलीसिया के लिए अनुवाद हुआ है। इसका मूल अर्थ साधारण और स्पष्ट हैं, इसके बावजूद सदीयों से इसके दूसरे अर्थ उलझन से भरे हुए दिए गए है। शब्द *कलीसिया* का अनुवाद हमारे शब्द *बुलाहट* से सम्बन्धित है।

आईए, इसे हम इस प्रकार देखें : शब्द *बुलाहट* को आप ध्वन्यात्मक रूप में लाएं तो आपके पास यूनानी भाषा का शब्द *कल* होगा। यह असल में यूनानी शब्द बुलाहट का मूल शब्द है। यूनानी भाषा बुलाहट की किया *कालिओ* शब्द है, जिसका मतलब किसी को बुलाने से है... जबकि कियाविशलेषण *इक* है जैसे लैटिन भाषा का *एक्स* जो ''बाहर'' के लिए है, और हमारे पास शब्द *एक्लीसिया* है या बाहर ''बुलाए हुए लोग'' पहला ''ए'' जो साधारण बोल चाल की भाषा और लिखित भाषा में है। इस तरह हमारे पास शब्द एक्लीसिया हो गया है जिसका अर्थ ''बुलाए हुए लोगों का समूह या चुने हुए लोग''।

''नए नियम मे एक *एक्लीसिया* 115 बार आया है, और तीन बार *मण्डली* के लिए और 112 बार *कलीसिया* के लिए अनुवाद किया गया है। इस कारण इसमें बहुत सी कमी आई है।

1. **लोग**

एक्लीसिया लोगों को सूचित करती है। यह एक संयुक्त शब्द है जिसका अर्थ लोगों के समूह से होता है।

2. **एक भवन नहीं**

क्लीसिया कभी भी एक भवन नहीं है। बाइबल में कोई रिकार्ड़ नहीं है, यहां तक कि पहली दो सदीयों के मसीही इतिहास मे कोई भी भवन कलीसिया (चर्च) नहीं कहलाई। वास्तव में हम ऐसा कहीं नहीं पढ़ते कि विश्वासी कभी भी अपनी सभाओं और प्रार्थना के लिए ऐसी जगह पर मिले जो उनके लिए बनाई गई थी।

1. **कोईनोनिया—प्रचार करने का केन्द्र नहीं**

और भी महत्वपूर्ण बात यह है कि, भवन के विचार से कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता यदि ''कलीसिया'' एक भवन में सच्ची *एक्लीसिया* के रूप मे पाई जाती है, और इसके नियम उसमें लागू किए जाते हैं। बहुत से लोगों ने ''कलीसिया में जाना'', प्रचार केन्द्र से थोड़ा अधिक में शामिल होने के बारें में बताया है। वे सप्ताह मे एक या दो बार संयोजित आराधना में मिलते और प्रचारक को सुनते थे। दूसरे लोग सप्ताह में एक बार अराधना के लिए जाते हैं, जहां प्रचार विशेष स्थान नही रखता परन्तु जहां वे एक साथ मिलकर वहां पर पुराने भजन गाना, पढ़ना, वचन को दोहराना या घुटने टेकना या खड़े होना आदि मे शामिल होते है।

प्रश्न यह है : क्या उनके बीच में वास्तविक समाज है, वास्तव में व्यवहारिक रूप से पवित्रआत्मा में एक दूसरे से सम्बन्ध रखना है? यह हो सकता है। पर तथ्य वहीं बना रहता है कि, वास्तविक *कोईनोनिया* परमेश्वर के बुलाए हुए या चुने हुओं के बीच में *एक्लीसिया* के रूप में पुनःस्थापना है, जिससे लाखों ''कलीसिया में जाने वाले'' लोग आज भी अनजान हैं।

तीन गुणी कलीसिया

एक्लीसिया शब्द के 112 संदर्भ नए नियम में ''कलीसिया'' कहकर अनुवाद किये गये हैं, का विशलेषण यह दिखाता है कि इसे तीन श्रेणी मं बांटा जा सकता है :

क. यीशु मसीह की विश्वव्यापी कलीसिया।

ख. कलीसिया जो शहर या कस्बें मे जानी जाती है।

ग. घर की कलीसिया।

क. विश्वव्यापी कलीसिया

यही है जिसे यीशु ने संदर्भ देकर पतरस से कहा, *''इस चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा।''* सपष्ट रूप से वह स्थान नहीं चुन रहा था, उसका अर्थ बुलाए हुए और पृथ्वी पर सभी बचाए हुए के लिए था। पौलुस के भी दिमाग में यही विश्वव्यापी मतलब था, जब उसने इफिसीयों को लिखा, *''परमेश्वर ने उसे (यीशु) यब चीज़ों के ऊपर कलीसिया में जो उसकी देह है सिर ठहराया''* और आगे *''परमेश्वर*

के कई गुणा ज्ञान को कलीसिया के द्वारा अधिकारियों और शासकों को जो स्वर्गीय स्थानों में है प्रगट किया जाएगा''।

ख. शहरी कलीसिया

करीब 100 जगहों पर *एक्लीसिया* शहर या कस्बे में होने का सकेंत देती है। उदाहरण के लिए, इनमें से सात शहर की कलीसियाओं को यीशु के धन्य शब्दों में और कलीसिया की आत्माओं के विषय प्रकाशितवाक्य के पहले 3 अध्यायों म प्रगट किया गया है। जैसे, *''थुआतीरा की कलीसिया के दूत को यह लिख....''*

प्रेरित 11 में हम पढ़ते हैं, *''समाचार यरूशलेम की कलीसिया में पहुंचा।''* 20वें अध्याय में *''मिलतुस से उसने (पौलुस) इफिसुस को भेजा और कलीसिया के प्राचीनों को बुलाया''* और भी बहुत से उदाहरण हैं। हम कभी नहीं पढ़ते कि आखिया या यूनान की कलीसिया या किसी प्रकार की राष्ट्रीय कलीसिया। यह हमेशा शहर या कस्बे की कलीसिया रही है।

हम ऐतीहासिक रिकार्ड़ से देख सकते हैं कि, इनमें कुछ शहर या कस्बे बहुत बड़े थे। पौलुस ने इन जगहों पर शहरी कलीसिया स्थापित करने में काफी लम्बा समय बिताया। 18 महीने कुरिन्थियों में और तीन वर्ष इफिसुस में जो उदाहरण के लिए करीब दो लाख लोगों का शहर था। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि, कुछ घटनाओं में शहर की कलीसियाएं बहुत बड़ी थी कि एक स्थान पर मिल सकें। ये छोटी–2 इकाईयों में बंटी हुई थी।

प्रसंगवंश, शहर की बंटी हुई कलीसिया की पहचान और एकता का, उनके अगुवों के आपसी प्रबन्ध पर निर्भर था। जब पौलुस ने इफिसीयों के प्राचीनों को बुलाया, तो उनके साथ उसका करीबी संचार रहा होगा। क्योंकि प्रतीत होता हैं, वे जल्द ही इक्ट्ठे हो जाते थें। पौलुस ने उन्हें एकल ईकाई के रूप में वर्णन किया। *''अपने और अपने झुण्ड की चौकसी करो''* और *''परमेश्वर की कलीसिया की चरवाही करो''।*

परन्तु ये पदवी और अहोदा कहां मिलता था? आरम्भ में लूका ने पौलुस के संदर्भ में लिखा कि वह प्रतिदिन चर्चा करता था, *''तुरन्नुस की पाठशाला में''* फिर भी बहुत से प्रमाण हैं कि विश्वास अपनी उन प्रारम्भिक सदीयों में बहुधा अपने ही घरों में जमा होते थे।

ग. घर की कलीसिया

प्रेरितों का दूसरा अध्याय वर्णन करता हैं कि, नए नियम की कलीसिया का ढ़ांचा और जीवन की शुरूआत कैसी थी। पतरस के पहले उपदेश मे हजारों लोगों ने *''हर देश जो आकाश के नीचे है''* सुना और उन्होंने प्रत्युतर दिया। पहले ही दिन जब पवित्रआत्मा उंडेला गया, तीन हजार लोगों ने पानी का बपतिस्मा लिया और यीशु के चेलों की मण्डली में मिला दिए गए।

इसके तुरन्त बाद हम एकदम पढ़ते हैं कि, वे यरूशलेम में प्रतिदिन आपस में मंदिर में मिला करते थे। वहां एक ही यहूदी मंदिर था, और रोटी तोड़ते *''एक घर से दूसरे घर''– कटओईकोन* – ये शब्द भी प्रयोग किया जा सकता है। *''बहुत से व्यक्तिगत घरों में''*। प्रेरित 5:42 में हम पढ़ते हैं *''मंदिर में प्रतिदिन और घरों में वे नियमित रूप से मिलते और प्रचार किया करते थे...''*

शीघ्र ही कट्टर यहुदियों के विरोध ने मंदिर के उपयोग पर रोक लगा दी। कुछ समय के लिए सीनागोग का प्रयोग किया गया, पर जैसा ही हम प्रेरित 19 मे देखते हैं कि अधिक समय नहीं गुजरा, जब ये भी विश्वासीयों के लिए बन्द कर दिए गए। पर हम प्रेरितों के काम में और पत्रियों में घर की कलीसियाओं के बारे में विशेष संदर्भों को पाते हैं।

उदाहरण के लिए, प्रेरित 12 में जब हैरोद, उनमें से कुछ जो कलीसिया के लोग थे, को कैद करने लगा और पतरस को भी बन्दीगृह में डाला। तब हम पढ़ते हैं कि *''प्रार्थनाएं कलीसिया द्वारा बार–बार की जाती थी''* (पद 5) कहां? निश्चय ही किसी कलीसिया की चारदीवारी में नहीं, पर मरियम के घर में, जो मरकुस की माता थी। यहीं पर बहुत से एक साथ मिलकर प्रार्थना कर रहे थे।

मिलेतुस के अवसर पर जो प्राचीन इक्टठे हुए उनका उपर संदर्भ दिया जा रहा है। पौलुस ने याद दिलाया उसने उनको खुलेआम और *''बहुत से व्यक्तिगत घरों में''* 3 वर्ष तक शिक्षा दी थी।

रोमियों के अन्तिम अध्याय में पौलुस लिखता है; *''प्रिसका और अक्विला को नमस्कार ... और उस कलीसिया को भी नमस्कार जो उनके घर मे है...''* एक दुसरी जगह पर वह निम्फीया के घर का जिक्र करता है और फिलेमोन को ऐसे लिखता है : *''तेरे घर की कलीसिया।''*

हममें से बहुत सहानुभुति में यूतिखुस को याद करते हैं, जब पौलुस देर तक रात को प्रचार करता रहा, तो वह खिड़की पर बैठा ऊंघ रहा था और नीचे जमीन पर तीसरी मंजिल से गिर गया, जहां स्थानीय कलीसिया संगति कर रही थी। ये भी एक व्यक्तिगत घर जान पड़ता है।

सुसमचार की ओर जब मुड़ें, तो हम पाते हें कि स्वंय यीशु ने उपदेश दिया और मंदिर, प्रार्थना सभाओं और खुले मैदान में प्रचार किया। उसने व्यक्तिगत रूप से घरों को अपनी सेवकाई में अधिक प्राथमिकता दी। ऐसे अवसरों पर घर के सभी लोंगों की आत्मांऐ परमेश्वर के लिए जीती जाने के परिणाम मिले, जैसा जक्कई की घटना मे हुआ। उसने बार–बार घरों में शिक्षा देने और व्याख्या करने के लिए इस्तेमाल किया, उदाहरण के रूप में मत्ती 13:16, *''वह भीड़ को छोड़कर घर में आया, और उसके चेले भी आए... ये कहते हुए कि हमें खेत के जंगली दानों का दृष्टान्त समझा...''।*

यीशु का चंगाई करना भी बहुधा घरों में ही होता था, उदाहरण के लिए जब चार व्यक्तियों ने एक लकवे के मारे हुए को छत के द्वारा नीचे उतारा।

इससे भी बढ़कर जब यीशु ने अपने बारह चेलों को भेजा (मत्ती 10) तो उसने उन्हें प्रचार करने, चंगा करने, मुर्दों को जिलाने और दुष्टात्माओं को निकालने के लिए भेजा। हर शहर और गांवों में उन्हें घरों में प्रवेश करना था। व्यक्तिगत घर उसकी सेवकाई का केन्द्र हैं। उसी प्रकार से (लूका 10) में उसने घरों में जाने को कहा, *''पहले कहों कि इस घर में कल्याण आया है...''।*

मैं जो बात बताने जा रहा हूं वह यह है कि, यीशु ने साधारण तरीके से, आम जगहों पर सेवकाई की और उसने कोई भवन नहीं बनाया, और ना ही कोई ऐसा सुझाव दिया कि कोई विशेष केन्द्र और मुख्य स्थान बनाया जाए।

तो इस प्रकार ये स्पष्ट जान पड़ता है कि यीशु और प्रारम्भिक कलीसिया के लिए, घर ही प्रार्थना, शिक्षा, आराधना ओर संगति के लिए साधारण स्थान था। कुछ छोटी जगहों जैसे त्रोआस में, सम्भव था, कि पूरी कलीसिया एक ही घर में एकत्र हो जाए। पर ये स्पष्ट रूप से असम्भव था कि, *''रोम मे परमेश्वर के प्रिय लोग जो वहां पर थे''* कि वे एक घर में इक्टठा हों क्योंकि हम जानते हैं कि वहां पर हजारों विश्वासी थे। कोई शक नही कि पौलुस के जीवन काल में सामाजिक–सभागृहों को बड़ी सभाओं के लिए प्रयोग किया जाता था, जबकि मूल सभाओं के स्थान घर ही थे जिसका वर्णन उपर किया गया है, जैसा प्रिसका और अक्विला का घर।

समझने की बात यह है कि बाइबल विश्वव्यापी कलीसिया के दो स्थानीय समूहो के विषय में बताती है : शहर की कलीसिया और घर की कलीसिया। मसीही इतिहास में ये श्रेणीबद्ध रूप से कहा गया है कि, प्रारम्भिक विश्वसीयों के पास कोई विशेष भवन नहीं थे परन्तु वे व्यक्तिगत–निजी घरों में मिलते थे।

जस्टिन मारर्टर (100–165 सन्) को रूसतीकस सरदार ने पूछा था, जैसा कि, ''दी मार्टीडोम ऑफ दी होली मार्टीस'' पुस्तक में कहा गया कि *''आप किस जगह पर आरधना करते हैं?''* जस्टिन ने उत्तर दिया, *''जहां पर हरेक चुनता है और मिल सकता है, क्योकि क्या आप सोचते है कि हम सब एक ही जगह पर मिलते हैं? नहीं, 'ऐसा नहीं है : क्योंकि यीशु के अनुयायीयों का परमेश्वर किसी स्थान के अनुसार सीमित नहीं किया गया है''।*

प्रथम

— इस सप्ताह के प्रश्न पत्र को देखें।

— अतिरिक्त ''गवाही के पत्र'' जो पूरे हैं उन्हे जमा कर लें। लोगों को अपसी विचार विमर्श की स्वतंत्रता है, उन्हें बांटने दिजिऐ।

अब

समूह के सदस्यों से कहें कि वे अपनी कलीसिया के अनुभवों को बांटे, ''कौन से अनुभव ने उनके कलीसियाई जीवन में उन पर गहरा असर डाला है?''

तब

आज रात की शिक्षा पर वार्ता कीजिए

1. आज की शिक्षा के बाद कौन सा नया आन्तरिक विचार आया जब आपने शब्द ''कलीसिया '' सुना?
(शायद आप समूह के चारों ओर प्रत्येक को एक दुसरे के साथ उसे बांटना चाहोगे)।

2. ''कोईनोनिया'' शब्द, परमेश्वर कलीसिया को कैसे देखता है को समझने में क्या भूमिका अदा करता हैं?

3. समूह को पूछें कि वे किस प्रकार की परिस्थिति का सुझाव दे सकते हैं, जिसमें विश्वाश्यिों की देह को प्रेम और निष्ठा में एक दुसरे के प्रति किस प्रकार प्रदर्शित करना चाहिए?

अगले सप्ताह के लिए

1. अधिवेश्न 5 के प्रश्न पत्र को पूरा करें। समूह से कहें कि उन्हें सावधानी से उस पर्चे को जो इस सप्ताह दिया गया हैं को पढ़ें, जिसका शीर्षक ''कलीसिया—एक्लीसिया'' है।

2. जिसने भी ''तीमुथियुस का पत्र'' तैयार या पूरा नहीं किया उसे प्रोत्साहित करें और कहें कि अगले सप्ताह उसकी एक प्रतिलिपी ले आंए।